"The Role of Management in Bussiness Success

''व्यवसाय की सफलता में प्रबंध की भूमिका''

Mr. Pradeep Yadav
Assistant Professor
H.O.D. Commerce

सार – सामान्य शब्दों में प्रबंध से आषय तो यह लगाया जाता है कि किसी भी कार्य को करने की कला यदि देखा जाये तो प्रबंध का अल्पकालीन और दीर्घकालीन परिणाम सदैव सफलतम ही रहा है। प्राचीनकाल से आज के आधुनिक समय तक प्रबंध की उपस्थिति हर स्थान पर है यदि परितर्वन हुआ है तो इसके स्वरुप में यहां पर हम कभी भी यह नहीं चाहते कि व्यवसाय में असफल हो, सदैव सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते रहें पर उस सीढ़ी पर पहुंचने का जो मार्ग है वह प्रबंध कहलाता है। यही प्रबंध हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में मार्ग का कार्य करता है इसके कला और विज्ञान दोनों पहलू है जो इसे इस प्रणाली से अपनाता है वह निष्चित रुप से अपनी सफलता के मार्ग पर सदैव अग्रणी रहता है।

प्रस्तावना – प्रबंध जैसे कि उच्चारण करते है और यह प्रतीत होने लगता है कि किसी कार्य को करने के विभिन्न चरणों का अध्ययन प्रबंध को इसी स्वभाव के कारण कला और विज्ञान की उपधि दी गई है। इसका प्रमाण ये है हम आसानीपूर्वक अपने संसाधनों से प्रबंध प्रक्रिया को शुरु करते है और विष्लेषण तथा पूर्वानुमान के साथ हम इसे पूरा करते है। हमारे व्यापार जगत की पहली सीढ़ी की शुरुआत प्रबंध से होती है क्योंकि हमारी सबसे पहली परीकल्पना होती है कि हम एक स्वस्थ्य व्यापार का निर्माण करें पर उस परिकल्पना को पूर्ण करने के लिये जिस मार्ग का हम चयन करते है वह प्रबंध है इस मार्ग से व्यावसाय की प्रत्येक इकाई प्रभावित होती है इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा की प्रबंध एक सतत् प्रक्रिया है जिसका अंत कभी नहीं होता है। निरंतर चलने वाली इस सतत् प्रक्रिया की तुलना मनुष्य के शरीर में संचालित होने वाले रक्त से की गई है जिस प्रकार रक्त का प्रवाह स्वस्थ्य शरीर के लिये आवष्यक होता है। ठीक उसी प्रकार प्रबंध अपने सतत् स्वरुप के कारण लगातार अनिवार्य है। हम अपने व्यापार के स्वरुप को प्रतिस्पर्धा की विषम परिस्थति से आगे ले जाकर समाज को एक अच्छे व्यापार का स्वरुप प्रदान करते है जिससे की समाज के प्रत्येक वर्ग का जीवन स्तर लगातार श्रेष्ठ हो। हम अपने संसाधनों को किस प्रकार से कुषलतापूर्वक उपयोग में लाये कि हमारे सीमित संसाधन हमें व्यापक दृष्टिकोण के साथ लक्ष्य तक पहुंचाने में सहायक हो।

प्रबंध के तत्व –

(1) नियंत्रण

(2) नियोजन

(3) संगठन

(4) संमवय

(5) अभिप्रेरणा

(6) चयन

नियंत्रण – व्यवसाय में नियंत्रण का महत्पवूर्ण योग्यदान है क्योंकि हमारे पास संसाधन है पर उनके उपयोग पर नियंत्रण नहीं है ठीक उसी प्रकार जैसे नई कार है पर चालक अकुषल है। ऐसे में परिणाम प्रतिकूल होंगे।

नियोजन – कल क्या करना है इसका आज विचार कर लेना नियोजन अथवा पूर्वानुमान कहलाता है पूर्वानुमान से जोखिम में कमी होती है तथा सफलता मिलने के अवसर अधिक है।

संगठन – एक कुषल संगठन ही सफल व्यापार का निर्माण करता है जिस प्रकार परिवार का मुखिया परिवार का संचालन करता है ठीक वैसे ही एक कुषल संगठन एक सफल व्यापार का संचालन करता है।

संमवय – यह महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि जैसे गाड़ी के पहिये यदि सामान्य रुप से नहीं चले तो गाड़ी लक्ष्य तक नहीं पहुंचेगी ठीक वैसे ही व्यावसाय में आपसी संमवय का होना अनिवार्य है।

अभिप्रेरणा – इस तत्व के द्वारा कार्य करने वाले कर्मचारियों की कार्यकुषलता को वित्तीय और अवित्तीय प्रेरणा के द्वारा प्रभावित किया जा सकता है।

चयन – हमारे व्यापार में कार्य करने वाले कर्मचारी यदि कुषल और योग्य है तो सीमित साधनों से अच्छे परिणाम की प्राप्ति होगी। इसलिए कर्मचारियों का चयन उनकी योग्यता और अनुभव के आधार पर होना चाहिए।

प्रबंध का व्यापार में महत्व –

(1) व्यावसाय में वृद्धि

(2) सतत् प्रक्रिया

(3) लाभ में वृद्धि

(4) संसाधनों का उचित उपयोग

(5) प्रतिस्पर्धा में सहायक

(6) भविष्य की योजना बनाने में सहायक

(7) जोखिम में कमी

(8) सामाजिक महत्व

(9) वित्तीय नियोजन

शोध विधि – शोधकर्त्ता के द्वारा जिस विषय का चयन किया जाता है यहां पर यह आवष्यक है कि विषय के चयन में सावधानी रखनी चाहिए। शोध प्रक्रिया की सफलता उसकी विषय साम्रगी के चयन पर आधारित रहती है उक्त शोध में लिए गये तत्व व्यवहारिक व्यावसायिक जगत के अनुभव पर आधरित है।

निष्कर्ष – किसी भी कार्य का अंतिम परिणाम उसकी सफलता असफलता का प्रमाण होता है प्रबंध आज वृहद स्तर पर उपयोग होने वाली एक स्वतत्रंत प्रक्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होगी व्यावहारिक जगत में प्रबंध का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ –

प्रबंध के सिद्धांत	डॉ. आर.सी. गुप्ता
प्रबंध के सिद्धांत	डॉ. एस.सी. सक्सेना
प्रबंध के सिद्धांत	डॉ. अरुण गंगेले
व्यावसायिक प्रबंध के सिद्धांत एवं उद्यमिता	प्रवीण कुमार अग्रवाल